डा0 ऋचा सिंह
एसोसिएट प्रो0
हिन्दी विभाग
हरिश्चन्द्र स्ना0 महा0 वाराणसी

अर्थ परिवर्तन

प्रश्न 1 – अर्थ परिवर्त के मुख्य कारण क्या हैं समझाइए ?

प्रश्न 2 – अर्थ परिवर्तन की दिशाओं का परिचय दीजिए।

टिप्पणी :– अर्थोत्कर्ष और अर्थापकर्ष

अर्थ परिवर्तन– परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत क्रम है। अतः जहॉ भी जीवन्तता होती है परिवर्तन का क्रम उसे अवश्य प्रभावित करता है। इससे मानव के मन, विचार और उनकी क्रियाओं में भी परिवर्तन होता है। भाषा भी एक जीवन्त सत्ता है और परिवर्तन के समक्ष वह भी सदा ही ———— है और यह मानव विचारों की वाहिक है, अतः विचारों के साथ भाषा में भी परिवर्तन होता है। इसी कारण भाषा के प्रधान तत्व अर्थ भी ध्वनि एवं रूप की भॉति परिवर्तन होता रहता है क्योंकि भाषा और अर्थ का विभिन्न सम्बन्ध है। इसकी अभिन्नता महाकवि कालिदास ने 'वागर्थाविव संपृक्तों वागर्थ प्रतिपत्तये' के द्वाारा स्पष्ट कर दी है।

जिस प्रकार भाषा का वाह्य रूप परिवर्तित होता है। उसी प्रकार उसके अर्थ रूप में भी परिवर्तन आता रहता है केवल उसका अर्थ परिवर्तन हो जाता है। उदाहरण के लिए कुशक (कुशा उखाड़ने वाला) 'गवेषक' (गाय खोजने वाला) प्रवीण (वीणा बजाने वाला) शब्दों के स्वरूप में आज कोई अन्तर नहीं आया किन्तु उसका अर्थ आज परिवर्तित हो गया है। आज कुशल नानाविध 'एक्सपर्ट' का प्रतिरूप हो गया है।

'ग्वेशक' गाय खेजने की जगह 'अनुसंधाता' बन बैठा है और प्रवीण – कुछलोग तो पाकेमारी में प्रवीण हो गए हैं।

दूसरे क्रम में शब्द का रूप भी बदल जाता है और साथ–साथ ही अर्थ भी जैसे भट्ट शब्द से हिन्दी में दो अर्थ विकसित हुए 1 भला 2 भद्दा दोनो के अर्थ में कितना फर्क है।

संस्कृत का आकाशवाणी हिन्दी में 'देववाणी' का प्रतिरूपक न रहकर आल इण्डिया रेडियो का वाचक बन गया है ये सभी उदाहरण अर्थ परिवर्तन के आन्तरिक और वाह्य मानसिक और भौतिक अनेक संश्लिष्ट होते हैं। जो समष्टि रूप में प्रभावित करते हैं जिनकी चरम परिणति अर्थ विकास में दृष्टिगत होती हैं

अर्थ परिवर्तन के कारण–

- भाव साहचर्य
- रूप संरचना
- सादृष्य
- वातावरण का प्रभाव
- विनम्रता प्रदर्शन
- लाक्षणिक प्रयोग या अलंकार
- सुश्राव्यता
- व्यंग
- चेतन– प्रक्रिया
- अज्ञान अथवा भ्रंति
- वल का अपसरण
- अज्ञानता
- सहचर्य
- सामान्य के लिए विशेष का प्रयोग
- नामकरण
- अंगी–अंग भाव का प्रदर्शन
- पुनरावृत्ति या पुनरुक्ति
- प्रयत्न लाघव

भाव साहचर्य

दो समीपवर्त्ती एवं साथ चलने वाले भावों में एक प्रबल हो जाता है तो दूसरा भाव क्रमशः क्षीण होकर लुप्त हो जाता है यह भी एक प्रकार से बल के अपसरण का ही उदाहरण है। जैसे– 'गोस्वामी' पहले गायों के स्वामी को कहा जाता था अतिरिक्त गोधन के कारण यह व्यक्ति समाज में धनी बनकर माननीय हो जाता था इसी के समानान्तर गोस्वामी के लिए एक भावना और कार्य करने लगी। वस्तुतः अधिक गायों की सेवा करने के कारण वह व्यक्ति धार्मिक भी हो गया और कालान्तर में गोस्वामी धार्मिक व्यक्ति का वाचक बन गया। 'गोस्वामी' शब्द एवं उसी से विकसित गोसाई शब्द मध्य युग में सन्तो के नाम के साथ जुड़ गया और आज 'गोसाई' एक जाति का वाचक भी बन गया।

भाव सहचर्य के साथ ही साथ पद–सहचर्य के कारण भी अर्थ सवंलित होती हैं संस्कृत के 'हस्तिनमृग' की जगह हिन्दी में 'हाथी' शब्द का अर्थ 'हस्तिन' में ही संक्रमित हो गया है।

इस प्रकार का भाव–सहचर्य हमारे दैनिक जीवन में व्यवहार में दिखाई देता है।

रूप संरचना

रूप परिवर्त से भी अर्थ परिवर्तन हो जाता है। हिन्दी में अनेक ऐसे तद्भव शब्द हैं जिनका मूल उद्देश्य ही है अर्थ परिवर्तन करना या उसमें नूतन चमत्कार उत्पन्न करना। जैसे– संस्कृत के 'वज्रवट' (घोर ब्रह्मचारी), पुंगव (वृषभ या श्रेष्ठ व्यक्ति) ग्रहण, स्थिति आदि शब्दों को लिया जाता है। जिनमें क्रमशः बजरबट्ट (महत्वपूर्ण) 'पोगा' (निरक्षर ब्राह्मण) आदि तद्भव शब्द विकसित हैं जिनका अर्थ–मूलार्थ से एकदम भिन्न है।

इसके अतिरिक्त धातु से भी शब्द रूप परिवर्तन मिलते है जैसे पद धातु से पढ़ना, पढ़ती, पढ़ते, पढ़ेंगे इत्यादि रूप बनते हैं कोश में केवल मूल शब्द पढ़ना ही मिलेगा लेकिन कोश रूपों का अर्थ व्याकरण द्वारा ही सम्भव है।

सादृश्य

सादृश्य भी अर्थ परिवर्तन का मुख्य कारण है। इसकी व्यापकता के कारण ही अर्थ वैज्ञानिकों ने सादृश्य का नियम निरूपित किया है। सादृश्य के कारण अनेक नूतन शब्दों में संक्रमित हो जाता है लेकिन उदाहरण के लिए आकाश में परिव्याप्त चन्द्रमा की 'चन्द्रिका' का एक पर्याय 'चॉदनी' भी है। सादृश्य के आधार पर उपर तानने या बिछाने के सफेद कपड़े के लिए चॉदनी शब्द का प्रयोग होने लगा है।

स्वरूप सादृश्य अथवा कर्म सादृश्य के आधार पर भी अर्थ परिवर्तित होता है उदाहरण के लिए 'खम्भे का कान', ईख की आँख, सुराही की गर्दन आदि का प्रयोग ऐसे ही है।

वातावरण का प्रभाव या परिवेश–परिवर्तन

वातावरण में परिवर्तन के कारण भी कई बार अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। वातावरण के विभिन्न स्तरों से उन्हे भिन्न–भिन्न प्रकार की विशिष्टता प्राप्त होती है। वातावरण एक जैसा नहीं रहता इसलिए इसके परिर्तन भी कई प्रकार के होते हैं यह मुख्यतः तीन क्षेत्रों में दृष्टिगत होता है–

1. भौगोलिक
2. सामाजिक
3. भैतिक और प्रथा सम्बन्धी

भौगोलिक परिवेश का परिवर्तन

भैगोलिक वातावरण के माध्यम से शब्दार्थ को सापेक्ष–गुण प्राप्त होते हैं। उष्ण एवं शीत प्रांत अदि की अर्थ सापेक्षता जलवायु के स्थानिक वैभिन्न के

आधार पर स्थापित होती है। भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव इसके अतिरिक्त भी पड़ता है। वस्तुतः जहॉ जिस वस्तु की अधिकता होती है, उसके आधार पर भी उसका नामकरण हो जाता है अंग्रेजी में 'कार्न' शब्द का अर्थ गल्ला अथवा अन्न है। और इंगलैण्ड के कुछ लोगों के लिए 'कार्न' गेंहूँ का समानार्थी है। श्वब्द एक ही है लेकिन भौगोलिक स्थान भेद से उसके दो अर्थ प्रचलित हो गए।

भैगोलिक परिवेश का परिवर्तन तारापुरावाला के मत के अनुसार वेद की प्राचीन ऋचाओं में 'उष्ण' का अर्थ भैंसा और बाद की ऋचाओं में ऊँट है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आरम्भ में जहॉ आर्य रहते थे वहां ऊट नहीं थे, बाद मे जब शीत भू–भाग से उष्ण भू–भाग की ओर आर्य आए और उन्हे एक नया उपयोगी जानवर मिला तो वे उसके लिए उस पूर्व परिचित शब्द का ही प्रयोग करने लगे जिसे भैंसे के लिए करते थे। तात्पर्य यह है कि ऊँट के अर्थ में 'उष्ट्र' शब्द का प्रयोग भौगोलिक कारणों से होने लगा।

सामाजिक परिवेश का परिवर्तन

एक ही भाषा में एक ही समय में वातावरण के अनुसार शब्दों का अर्थ परिवर्तन होता रहता है। अंग्रेजी में मदर, फादर, ब्रदर, सिस्टर आदि शब्दों का जो अर्थ परिवार में है, वहीं रोमन कैथोलिक धार्मिक संगठन में नहीं। 'सिस्टर' का अर्थ परिवार में 'बहन' होता है किन्तु अस्पताल में प्रचारिका (नर्स)। इसी प्रकार में सभा में व्यख्यान देने वाले का भाई और 'बहन' कुछ दूसरे अर्थ रखते हैं और घर में कुछ दूसरे संस्कृत 'पंडित' शब्द मूल रूप में ज्ञानी या कुशल का पर्याय है। किन्तु तीथों या घाटों पर 'शोषक' का और इनकी भवमानना के लिए ही 'पंण्डित' शब्द 'पण्डा' के रूप में परिवर्तित हो गया है कभी–कभी पण्डित शब्द लाक्षणिक अर्थ में 'मूर्ख' के अथ में प्रयुकत होता है। आज 'संध्या' शब्द दिवावसान का पर्याय है किन्तु पहले 'बन्दन' एवं पूजन के लिए प्रयुक्त होता था।

भौतिक परिवेश और प्रथा सम्बन्धी परिवर्तन

भौतिक साधनों में परिवर्तन के साथ वस्तुओं के नाम भी होते जा रहे हैं। पानी पीने का कोई बर्तन हमारे यहॉ रहा होगा, किन्तु आज उसका नाम कोई नहीं जानता सभी 'गिलास' में पानी पीते हैं 'गिलास' अंग्रेजी देन है। ऐसे ही दर्पण के लिए आज 'शीशा' शब्द का प्रयोग होने लगा है। शीशा शब्द विशेष का नाम है, किन्तु अब उसका प्रयोग कॉच के लिए होने लगा है।

कई बार प्रथा सम्बन्धी परिवर्तन आने पर शब्दार्थ ही बदल जाता है। इस वातावरण के परिवर्तन में ऐसा होता है कि पुरानी प्रथाओं के कुछ शब्द तो लुप्त हो जाते हैं, वैदिक शब्द 'यजमान' यज्ञ करने वाले के लिए प्रयुक्त होता था। यज्ञ की प्रथा के लुप्त होने के साथ–साथ उसका वह अर्थ भी समाप्त हो गया। हिन्दी क्षेत्र में 1000 ई0 के आस–पास 'गाड़ी का अर्थ ठीक वही नहीं था जो आज है ऐसे अर्थ परिवर्तन देहात में प्रयुक्त होने वाले अनेकानेक शब्दों में मिलते हैं।

राजनीति परिवेश का शब्दार्थ पर प्रभाव भी रेखांकित करने योग्य पड़ता है। देश की राजनीतिक परिस्थिति शब्दों में अर्थ की नवीन छाया उद्‌भाषित करती है राजनीति के क्षेत्र में 'क्रांति' में एक विशेष अर्थ ग्रहण किया है। इसी प्रकार 'शीत युद्ध', 'संधि', 'संसद', 'आयोग' आदि शब्द भी विशिष्ट राजैतिक रंगो से अनुरंजित है।

विनम्रता–प्रदर्शन

विनम्रता, सामाजिक शिष्टाचार के अन्तर्गत अनिवार्य तत्व है। उसका प्रदर्शन भाषा में सर्वप्रथम होता है और इसी नम्रता प्रदर्शन के कारण शब्द के अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। जैसे किसी अतिथि के पधारने पर कोई धनी अपने को अकिंचन ओर आधुनिक ढ़ंग के विशाल भवन को कुटिया कहता है, पर वास्तव में न तो वह अकिंचन होता है और न तो उसका घर

इतना साधारण की उसे कुटिया कहा जाए। केवल विनम्रतावश ही वह ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है। अपने लिए नाचीज, अकिंचन, सेवक जैसे शब्दों के व्यवहार के मूल में नम्रता प्रदर्शन तथा जब अपने घर का पता देते हैं तो कहते हैं कि 'खाकसार का गरीबखाना फलॉ जगह है।' अतः इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि शब्दों के अर्थ विनम्रता से भी परिवर्तित हो जाया करते हैं।

लाक्षणिक प्रयोग या अलंकार

मनुष्य की नैसर्गिक भाषा सब प्रकार की अभिवयंजना के उपयुक्त नहीं होती। बातचीत या किसी चीज के वर्ण में वक्ता या लेखक का यही प्रयास रहता है कि वह कम से कम शब्दों में अपने को अधिक से अधिक स्पष्ट एवं सुन्दर रूप में व्यक्त कर सके। ऐसा करने के लिए वह लाक्षणिक प्रयोगों (उपमा, रूपक आदि) का सहारा लेता है। ये लाक्षणिक प्रयोग अभिव्यंजना को एक नयी भंगिमा प्रदान करते हैं जिससे व्यक्ति की पहचान होती है उन सब का प्रभाव यह पड़ता है कि अर्थ में परिवर्तन आ उपस्थित होता है जैसे शैतान की खाला, काला नाग, छिपा रूस्तम आदि अपने अन्दर भाव राशि छिपाए हैं ब्रील के मनानुसार अन्य कारणों की अपेक्षा अलंकारों के प्रयोग से अर्थ एक क्षण में परिवर्तित हो जाता है। भार्तृहरि ने भी इसका उल्लेख इस कारिक में किया है।

''संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्य विरोधिता।

अर्थः प्रकरणं लिंग शब्दस्यान्यस्य सान्निधिः।

सामर्थ्य मौचिति देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः।

शब्दार्थ स्यानवच्छेदे विशेष स्मृति हेवतः।

जैसे– 'सुराही की गर्दन', 'नीरस–भाव्य', परोक्ष रूप में उपकार करने वाले को साँप, मैं कालिदास का अध्ययन कर रहा हूँ, मैं प्रसाद का शोध

कर रहा हूँ आदि प्रयोग लाक्षणिक प्रयोगों के ही उदाहरण हैं। इनमें अर्थ परिवर्तन का अर्थ स्वरूप है।

सुश्राव्यता या अशोभन

सुश्राव्यता 'यूफेमिज्म' (Euphemims) 'लैंग्वेज' का प्रयोग 'श्रवण–सुखद' शब्दों के लिए किया जाता है अभिप्राय यह है कि अशोभन एवं अप्रिय कार्यों के लिए भी शोभन भाषा का प्रयोग किया जाए। प्रायः अशुभसूचक बातें बचाकर गोल–मोल शब्दों में प्रकट की जाती है जैसे– वैधव्य को 'चूड़ी–फूटना' कहते हैं उई बोलने वाले सभ्य समाज में 'वह बिमार है' न कहकर उनके दुश्मनों की तबियत नाराज है यह कह करते हैं।

लाश को 'मिट्टी' दैनिक क्रिया विशेष 'पखाना' को 'गर्भिणी' के लिए 'पॉव भारी होना' अथवा अंग्रेजी में 'To be in family way' आदि का प्रयोग अश्लील को 'श्लील' (भद्र) बनाने के लिए होता है।

अश्लील को अशुभ की भाँति कटु और भयंकर भी मनुष्य को अप्रिय है अतः उसके परिमरर्जन के लिए भी कुछ अन्य शब्दों का सहारा लिया जाता है। उदाहरण के लिए भोजपुरी में सर्प को 'रस्सी', 'जेवरी', 'कीरा', तथा बिच्छु को 'टेकड़ी' कहा जात है। साँप और बिच्छु से भी भयानक चेचक होता है अतः चेचक के लिए माता, महारानी, माई आदि का प्रयोग होता है।

अंधविश्वास के कारण भी कुछ अन्य शब्द, अर्थ के वाहक बन जाते हैं। मनुस्मृति के एक श्लोक के अनुसार कल्याण चाहने वाले को अपना, गुरू का नाम, कृपण का नाम, ज्येष्ठ का नाम नहीं लेना चाहिए 'आच्यनाम गरोर्नाम नामाति कृपाणस्य च श्रेयस्कामो न गृहणीयात् ज्येष्ठापच्यकलवयोः।' अतः इनका नमन लेने के कारण इन्हे अन्य नामों से पुकारा जाता है। पति

का नाम भी लिया जाता है। अतः पति को 'मलिकाए, बबुआ के बाई' पत्नि को 'मलकिन', 'बचवा के माई' आदि नामों से अभिहित किया जाता है।

गंदे एवं छोटे कार्यों के लिए भी अच्छे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यथा भंगी का 'जमादार' और 'मेहतर', 'चमार' को 'रविदास' अहीर को यादव तथा आस्ट्रेलिया में तो नौकर को 'सरवेंट' न कहकर 'होम एसोसिएट' कहा जाता है। गाँधी जी ने चमार के लिए हरिजन शब्द का प्रयोग किया था तब से यह भक्त का वाचक न रहकर 'अछूत' का वाचक बन गया।

व्यंग

भारतीय काव्यशास्त्र में प्रयुक्त 'विपरीत लक्षण' का प्रयोग भी व्यंग्यार्थ के लिए होता है और अंग्रेजी को 'आयसी' का भी। हिन्दी में प्रचलित 'व्यंग' अंग्रेजी के 'आयसी' का प्रतिरूप हो गया है। नीचे के उदाहरणों में प्रायः सभी का शाब्दिक अर्थ बुद्धिमान है, किन्तु व्यंग के कारण प्रचलन में वे मुर्ख के लिए व्यंगार्थ है धर देर से लौटने वाले लड़के से जब बाप कहता है– क्यों हजरत आज इतने सबेरे कहाँ से आ रहे हैं तो उसका अर्थ विपरीत दिशा में होता है। कंजूस को कर्ण, कुरूप को कामदेव, आततायी को कृपानिधान आदि कहने में यही भाव उत्पन्न होता है।

चेतन–प्रक्रिया

वास्तव में अर्थ परिवर्तन की समस्त प्रकृया मनोवैज्ञानिक है इसलिए ध्वनि–परिवर्तन की अपेक्षा अर्थ–परिवर्तन की क्रिया में चेतन प्रकृया अधिक सक्रिय रहती है अनेक अवसरों पर वक्ता जान–बूझ कर नवीन, प्रभावकारी विशेष अभिव्यक्ति मूलक और चित्रमय रूप में वर्ण–संघात का प्रयोग करे हैं संस्कृत 'रसिका' के मूलार्थ में से 'अवमानना' की भाव–सम्पृकित को लेकर हिन्दी का रसिया शब्द निर्मित है। धर्मावतार, उस्ताद, दादा के लक्षणामूलक प्रयोग वाक्य में प्रचुर संख्या में हैं।

अज्ञान अथवा भ्रान्ति

अज्ञान के कारण भी शब्दों का अर्थ प्रभावित होता हैं। अज्ञानतावश गलत अर्थ में प्रयोग करने से भी शब्दों का अर्थ बदल जाता है। अज्ञान अचेतन प्रक्रिया की औद्भूमिक का नाम है। उदाहरण के लिए 'अविज्ञ' और 'अभिज्ञ' शब्द को लिया जा सकता है।

भोजपूरी के कलंक के लिए 'अकलंक' फजूल के लिए बेफजूल और गुजराती में 'गजूर'। भोजपूरी में खालिस के लिए निखालिस का प्रयोग भी इसी अज्ञान का परिणाम है।

बल का अपसरण

कई शब्दों का प्रधान अर्थ धीरे–धीरे लुप्त हो जाता है और उसके स्थान पर उससे मिलता–जुलता गौण अर्थ उभर आता है गौण अर्थ पर बल होने के कारण इसे बल का अपसरण कहा जाता है। अंग्रेजी रिपोर्ट शब्द का प्रधान अर्थ 'सूचना' था किसी भी तरह की सूचना को रिपोर्ट कहा जा सकता है, किंतु सूचनाएं प्रायः थाने में दी जाती थी। अब रिपोर्ट शब्द का प्रधान अर्थ 'सूचना' लुप्तप्राय सा हो गया है। और अब उसके स्थान पर 'शिकायत' अर्थप्रधान हो गया है।

अज्ञानता

आंशिक पर्यायों में निहित सूक्ष्म अन्तर का ज्ञान न होने के कारण प्रायः दृष्टि के स्थान पर संतोष, आविस्कार के स्थान पर अन्वेषण, अद्वितीय के स्थान पर अनुपम, प्रदान के स्थान पर अर्पण, अवस्था के स्थान पर आयु, इत्यादि के स्थान पर आदि, अर्चना के स्थान पर पूजा, आवश्यक के स्थान पर अविार्य का प्रयोग पूर्ण पर्यायवाची शब्दों की भाति कर दिया जाता है।

साहचर्य

कई शब्दों के अर्थ साहचर्य के कारण परिवर्तित हो जाते हैं। राजस्थान में सिरोही एक प्रसिद्ध नगर है, जो कभि श्रेष्ठ तलवारों के लिए प्रसिद्ध था। साहचर्य के कारण आज सिरोही शब्द का अर्थ 'तलवार' हो गया है। कहा जाता है कि विदेश से जब तम्बाकू भारत आया तो सबसे पहले उसे सूरत बन्दरगाह पर उतारा गया था सूरत के साहचर्य पर तम्बाकू विशेष को सूरती, कंबोज के साहचर्य के कारण उड़द को कंबोजी कहा जाना साहचर्य अन्य है।

साहचर्य के लिए विशेष का प्रयोग

यह प्रस्तुत अर्थ–विस्तार का ही एक रूप है। कभी–कभी पूरे वर्ग के लिए उसी वर्ग की वस्तु का प्रयोग किया जाता है। जैसे– 'स्याही' शब्द (स्याह) से बना है परन्तु उसका प्रयोग केवल काली रोशनाई के लिए नहीं होता, किसी भी रंग की रोशनाई स्याही कहलाती है ऐसे–'जलपान कर लीजिए' में केवल पानी पीने की बात नहीं निहीत है, प्रच्युत वह सामान्यतः साधु भोजन का वाचक है।

नामकरण

मनुष्य की सीमाएं सीमित हैं अतः वह परिचित चीजों के आधार पर ही चीजों का नाम रखता है। अतः वस्तुओं के अर्थ में 'सोम का विस्तार से वर्णन है। किन्तु वह अप्राप्य या अतः एक हण विशेष 'पूतीकतृण' को ही सोम कहा जाने लगा। पर्वतीय प्रदेश में एक घास का नाम बिच्छु है। दस घास के स्पर्श से पीड़ा होती है, अतः उसे बिच्छु के डंक सादृश्य के कारण यह नाम दिया गया है। चौबीस मिनट का समय घड़ी कहलाता था किन्तु आज समय सूचक यन्त्र घड़ी बन गया है।

अंगी–अंग भाव का प्रदर्शन

किसी वस्तु वर्ग या व्यक्ति के एक अंश या अंग के प्राधान्य के नाम पर भी अर्थ परिवर्तन होता है इसमें अर्थ विस्तार और संकोच दोनो ही प्रवृत्तियां दृष्टिगत होती हैं उदाहरण के लिए 'गाँधी टोपी' कांगेस का और 'लाल झंडा' कम्युनिस्टों का प्रतीक बन गया है।

पुनरावृत्ति या पुनरूक्ति

कभी–कभी शब्दों का दुहरा प्रयोग चल पड़ता है और इसके कारण भी उसके आधे भाग में अर्थ–परिवर्तन हो जाते हैं जिसमें नवीन छाया संक्रमित होने लगती है। जैसे– 'बिन्ध्याचल' (बिन्ध्य+अचल) की जगह 'बिन्ध्याचल पर्वत' का प्रयोग 'मलय' की जगह 'मलयागिरी' का प्रयोग दर्शनीय है बिन्ध्याचल में 'विन्ध्य' नाम है एवं 'अचल' पर्वत का वाचक है किन्तु हम 'मलय' नाम मानकर उसके साथ 'गिरी' का प्रयोग करते हैं इसी प्रकार हिमालय को फूलों का गुलदस्ता भी कहते हैं।

प्रयत्न लाघव

मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह कम से कम श्रम के द्वारा अधिक से अधिक कार्य की उपलब्धि चाहता है। परिणाम स्वरूप भाषा में भी दो या अधिक शब्दों के योग से बने शब्दों में से कुछ अंश अथवा यौगिक शब्द में से एक या दो शब्द छोड़ देने पर भी वही अर्थ व्यक्त कर दिया जाता है। रेलवे–स्टेशन और बस–स्टेशन दो अलग–अलग स्थान है परन्तु इन दोनों के लिए केवल स्टेशन का प्रयोग होने लगा है। रजिस्टर्ड लेटर के लिए रजिस्ट्री पोस्ट कार्ड के लिए कार्ड, पोस्टल स्टैम्प के लिए स्टेम्प जैसे प्रयोग भी प्रयत्न लाघव जन्य है।

व्यक्तिगत योग्यता

व्यक्तिगत योग्यता के अनुसार भी शब्दों के अर्थ में परिवर्तन होता रहता है। प्रत्येक व्यक्ति शब्दों को एक ही सन्दर्भ में नहीं समझता। जैसे– एक दार्शनिक ईश्वर अर्थ कुछ और लेता है तथा भक्त कुछ और। 'शून्य' शब्द

का अर्थ दार्शनिक निर्गुणवादी के लिए कुछ और होगा, वैज्ञानिकों के लिए कुछ और तथा गणितज्ञ के लिए कुछ और टक्कर ने ठीक ही लिखा है कि शब्द तो एक प्रकार का सिक्का है, पर ऐसा सिक्का जिसका मूल्य निश्चित नहीं। बोलने वाला उसे दो रूपये का समझ सकता है और सुनने वाला अपनी योग्यतानुसार उसे तीन या एक रूपये का समझ सकता है। इस प्रकार के शब्दों में स्थायी रूप से आर्भिक उतार–चढ़ाव व्यक्तिगत स्तर पर आते रहते हैं।

दूसरी भाषा में आगत शब्दों के अर्थ में परिवर्तन

कई बार भाषान्तर हो जाने के सन्दर्भ में परिवर्तन हो जाता है। जैसे– दरिया ईसानी में नदी को, गुजराती और मराठी में दरिया समुद्र और नदी दोनों के लिए प्रयुक्त होता है। द्रविण भाषा का एक शब्द 'पिलला' भेजपूरी क्षेत्र में कुत्ते के लिए प्रयुक्त होता है किन्तु द्रविण में इसकाा प्रयोग 'बच्चा' के लिए होता है संस्कृत में 'वारिका' बाग को कहते हैं। हिन्दी में बगीचा और बंगला में यही शब्द मकान के लिए प्रयुक्त होता है। हिन्दी के नीले रंग को गुजराती में हरा रंग कहते हैं।

साम्प्रदायिक अर्थ का विकास

विश्व में अनेक धर्म हैं किन्तु सभी धर्म एक दूसरेके विरोधी हैं इनमें परस्पर सदियों से संघर्ष होता रहा है। अतः एक दूसरे के प्रति हेष की अभिव्यक्ति के लिए अनेक शब्द प्रयुक्त होते हैं जो मूल अर्थ से भिन्न नूतन अर्थच्छता विकीर्ण करते हैं 'अछुर' शब्द 'असुर' का वाचक है। हमारा सम्बन्ध ईरानियों से जब तक मधुर बना रहा 'अछुर' शब्द का प्रयोग देवता के लिए होता था किन्तु ईरानियों से सम्बन्ध बिगड़ते ही 'असुर' शब्द राक्षस का वाचक बन गया। अतः धर्म के कारण भी अर्थ परिवर्तन सम्भव है।

स्नेह आधिक्य के कारण

कई बार स्नेहातिशय भी अर्थ–परिवर्तन का कारण बन जाता है। प्यार में बाप, बेटे को सुअर, गधा, बदमाश कह बैठते हैं। अत्यन्त सैतान, दुष्ट, पगली आदि शब्दों का प्रयोग घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण चपलतावश भी हो जाता है। क्रोध में भी शब्दों के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है– क्रोध में पागल, पाजी, राक्षस, बच्चू आदि शब्दों का प्रयोग होता है। इस प्रकार भाव प्रवणता के कारण भाषा में बड़ी शीघ्रता से परिवर्तन होता रहता है।

भाषा की अन्तर्निहित अनिश्चितता

किसी भी भाषा में बहुत से शब्द ऐसे होते है जिनके अर्थ सुनिश्चित नहीं होते हैं। अमूर्त भाषों के वाचक शब्द प्रायः इसी शब्द में आते हैं जैसे– अनुकम्पा, कृपा और दया में भेद करना बहुत कठिन है इसका परिणाम यह होता है कि भिन्न–भिन्न प्रयोक्ताओं द्वारा इनके प्रयोग में भी भिन्नता की जाती है।

सन्दर्भ सूची साभार

डा0 राजमणि शर्मा– उाधुनिक भाषा विज्ञान

डा0 भोलानाथ तिवारी– भाषा विज्ञान

डा0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना